

शिव चालोसा

दोहा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

चौपाई 1

जय गिरिजापति दीनदयाला।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला॥

चौपाई 2

भाल चन्द्रमा सोहत नीके।
कानन कुण्डल नागफनी के॥

चौपाई 3

अंग गौर शिर गंग बहाये।
मुण्डमाल तन छार लगाये॥

चौपाई 4

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे।
छवि को देखि नाग मन मोहे॥

चौपाई 5

मैना मातु की हूँ दुलारी।
वाम अंग सोहत छवि न्यारी॥

चौपाई 6

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥

चौपाई 7

नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे॥

चौपाई 8

कार्तिक श्याम और गणराऊ।
या छवि को कहि जात न काऊ॥

चौपाई 9

देवन जबहीं जाय पुकारा।
तबहीं दुख प्रभु आप निवारा॥

चौपाई 10

किया उपद्रव तारक भारी।
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥

चौपाई 11

तुरत षडानन आप पठायउ।
लव निमेष महुँ मारि गिरायउ॥

चौपाई 12

आप जलंधर असुर संहारा।
सुयश तुम्हार विदित संसारा॥

चौपाई 13

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहिं कृपा कर लीन बचाई॥

चौपाई 14

किया तपहिं भागीरथ भारी।
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥

चौपाई 15

दानिन महुँ तुम सम कोउ नाही।
सेवक स्तुति करत सदाहीं॥

चौपाई 16

वेद नाम महिमा तव गाई।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई॥

चौपाई 17

प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला।
जरत सुरासुर भए विहाला॥

चौपाई 18

कीन्ही दया तहँ करी सहाई।
नीलकण्ठ तब नाम कहाई॥

चौपाई 19

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥

चौपाई 20

सहस कमल में हो रहे धारी।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥

चौपाई 21

एक कमल प्रभु राखेउ जोई।
कमल नयन पूजन चहं सोई॥

चौपाई 22

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर।
भए प्रसन्न दिए इच्छित वर॥

चौपाई 23

जय जय जय अनन्त अविनाशी।
करत कृपा सब के घटवासी॥

चौपाई 24

दुष्ट सकल नित मोहि सतावै।
भ्रमत रहौ मोहि चैन न आवै॥

चौपाई 25

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो।
यहि अवसर मोहि आन उबारो॥

चौपाई 26

लै त्रिशूल शत्रुन को मारो।
संकट से मोहि आन उबारो॥

चौपाई 27

मात-पिता भ्राता सब कोई।
संकट में पूछत नहिं कोई॥

चौपाई 28

स्वामी एक है आस तुम्हारी।
आय हरहु मम संकट भारी॥

चौपाई 29

धन निर्धन को देत सदाहीं।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं॥

चौपाई 30

अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी।
क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥

चौपाई 31

शंकर हो संकट के नाशन।
मंगल कारण विघ्न विनाशन॥

चौपाई 32

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं।
शारद नारद शीश नवावैं॥

चौपाई 33

नमो नमो जय नमः शिवाय।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥

चौपाई 34

जो यह पाठ करे मन लाई।
ता पर होत हैं शम्भु सहाई॥

चौपाई 35

ऋनियां जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करे सो पावन हारी॥

चौपाई 36

पुत्र हीन कर इच्छा जोई।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥

चौपाई 37

पण्डित त्रयोदशी को लावे।
ध्यान पूर्वक होम करावे॥

चौपाई 38

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा।
तन नहिं ताके रहै कलेशा॥

चौपाई 39

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥

चौपाई 40

जन्म जन्म के पाप नसावे।
अन्त धाम शिवपुर में पावे॥

समापन चौपाई

कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी॥

समापन दोहा 1

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश॥

समापन दोहा 2

मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण॥